

असम के चराइदेव मोईदाम

केंद्र ने इस वर्ष [यूनेस्को विश्व वरिासत स्थल](#) के लिये असम में **चराइदेव मोईदाम** को नामति करने का नरिणय लयिा है ।

- **पूर्वोत्तर भारत में सांस्कृतिक वरिासत की श्रेणी में फलिहाल कोई विश्व वरिासत स्थल नहीं है ।**
- चराइदेव मोईदाम का नामांकन ऐसे समय में महत्त्वपूर्ण हो गया है जब देश [लचति बोरफुकन](#) की **400वीं जयंती मना रहा है ।**



चराइदेव मोईदाम:

- **चराइदेव मोईदाम/मैदाम** , असम में **ताई अहोम समुदाय** की उत्तर मध्यकालीन (13वीं-19वीं शताब्दी) टीला दफन परंपरा का प्रतनिधित्व करता है ।
- यह अहोम राजवंश के सदस्यों के नश्वर अवशेषों को प्रतषिठापति करता है, जिन्हें **उनकी सामग्री के साथ दफनाया जाता था ।**
 - 18 वीं शताब्दी के बाद **अहोम शासकों ने दाह संस्कार की हद्द पद्धति को अपनाया** और **चराइदेव के मोईदाम** में दाह संस्कार की हड्डियों एवं राख को दफनाना शुरू कर दिया ।
- अब तक खोजे गए 386 मोईदाम में से **अहोमों के टीले की दफन परंपरा के चराइदेव में 90 शाही समाधि** सुव्यवस्थित ढंग से संरक्षित, सबसे अधिक प्रतनिधित्व वाले और पूर्ण उदाहरण हैं ।

अहोम साम्राज्य:

- **परचिय:**
 - वर्ष 1228 में **असम की बरहमपुत्र घाटी** में स्थापति, अहोम साम्राज्य ने 600 वर्षों तक अपनी संप्रभुता बरकरार रखी ।
 - **छोलुंग सुकफा** (Chaolung Sukapha) 13वीं शताब्दी के अहोम साम्राज्य के संस्थापक थे ।
 - अहोम ने छह शताब्दियों तक असम पर शासन किया था । अहोम शासकों का इस भूमिपर नयितरण वर्ष 1826 की **यांडाबू की संधि** (Treaty of Yandaboo) होने तक था ।
- **राजनीतिक व्यवस्था:**

- अहोमों ने **भुइयाँ (ज़मींदारों)** की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था को समाप्त कर एक नया राज्य बनाया।
- अहोम राज्य **बंधुआ मज़दूरों (Forced Labour)** पर नरिभर था। राज्य के लिये इस प्रकार की मज़दूरी करने वालों को पाइक (Paik) कहा जाता था।
- **समाज:**
 - अहोम समाज को **कुल/खेल (Clan/Khel)** में वभिाजति कयिा गया था। एक कुल/खेल का सामान्यतः कई गाँवों पर नयितरण होता था।
 - अहोम साम्राज्य के लोग अपने स्वयं के आदवासी देवताओं की पूजा करते थे, फरि भी उन्होंने हद्वि धरुम और असमयिा भाषा को स्वीकार कयिा।
 - हालौकअहोम राजाओं ने **हद्वि धरुम** अपनाणे के बाद भी अपनी पारंपरकि मान्यताओं को पूरी तरह से नहीं छोड़ा।
- **सैन्य रणनीति:**
 - अहोम सेना की पूरी टुकड़ी में **पैदल सेना, नौसेना, तोपखाने, हाथी, घुडसवार सेना और जासूस** शामिल थे।
 - युद्ध में इस्तेमाल कयिे जाने वाले मुख्य हथयिारों में तलवार, भाला, बंदूक, तोप, धनुष और तीर शामिल थे।
 - अहोम सैनिकों को **गोरलिला युद्ध (Guerilla Fighting)** में वशेषजुता प्राप्त थी। उन्होंने **बरहमपुत्र नदी पर नाव का पुल (Boat Bridge) बनाने की तकनीक** भी सीखी थी।

लचति बोरफुकन:

- 24 नवंबर, 1622 को जनुमे बोरफुकन को **1671 में सरायघाट की लड़ाई में उनके नेतृत्व के लयिे** जाना जाता था, जसिमें **मुगल सेना** के असम पर कबुजा करने के प्रयास को वफिल कर दयिा गया था।
 - सरायघाट की लड़ाई **1671 में गुवाहाटी में बरहमपुत्र** के तट पर लड़ी गई थी।
 - इसे एक नदी पर सबसे बड़ी नौसैनकि लड़ाइयों में से एक माना जाता है जसिके **परणामस्वरूप मुगलों पर अहोम की जीत हुई।**
- उन्हें महान नौसैनकि रणनीतयिों से **भारत की नौसेना को मज़बूत करने, अंतरदेशीय जल परविहन को पुनर्जीवति करने** और इससे जुड़े बुनयिादी ढाँचे के नरिमाण हेतु जाना जाता है।
- **लचति बोरफुकन स्वरण पदक राष्ट्रीय रक्षा अकादमी** के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को दयिा जाता है।
 - इस पदक की स्थापना 1999 में रक्षाकरुमयिों को बोरफुकन की **वीरता और बलदिान का अनुकरण करने हेतु प्रेरति करने के लयिे** की गई थी।

सरोत: द हद्वि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/assam-s-charaideo-moidams>